दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर–273001
(नैक प्रत्यायित)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
फैक्स नं0 0551–2334549
e-mail : dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

दिनांक : 09.01.2020

समाचार स्वरुप प्रकाशनार्थ

दिनांक 09.01.2021 को महाविद्यालय में **उ.प्र.हिन्दी संस्थान लखनऊ तथा दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित "आचार्य भगवती प्रसाद सिंह के व्यक्तित्व एवं कृतित्व"** पर आयोजित **दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी** के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए **विशिष्ट अतिथि प्रो. कृष्णचन्द लाल** ने कहा कि डॉ. भगवती प्रसाद सिंह मध्यकालीन भक्ति साहित्य, खासकर राम भक्ति काव्य परम्परा के पथिकृत आचार्य थे। अनुसंधान, संपादन, पाण्डुलिपियों की खोज समुचित संरक्षण, आलोचना, संतो के प्रति सहज अनुरक्ति तथा शिष्यों के प्रति अनन्य वात्सल्य भाव के लिए वे सुविख्यात रहे हैं। उन्होंने आगे कहा कि किसी व्यक्ति की मृत्यु उस दिन नही होती जिस दिन उसका देहान्त होता है बल्कि उसकी वास्तविक मृत्यु तब होती है, जब लोग उसे याद करना बन्द कर देते हैं। डॉ. सिंह बहुत बड़े लोक शिक्षक के रूप में थे, वे जितना कक्षाओं में ज्ञान देते थे उससे कही ज्यादा व्यावहारिक ज्ञान देते थे। वह ऐसे व्यक्तित्व के धनी थे जिनसे मिलने के बाद उन्हें भुला नही जा सकता।

मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने महामहोपाध्याय पं.गोपीनाथ कविराज को उद्धृत करते हुए कहा कि हर व्यक्ति का एक प्रभा मण्डल होता है और जिसका जितना बड़ा प्रभा मण्डल होता है वह उतना ही बड़े व्यक्तित्व का स्वामी होता है। डॉ. सिंह का प्रभा मण्डल बहुत बड़ा था ऐसे व्यक्ति थे जिनसे मिलने के बाद उनकी छवि मानस पटल पर सदा के लिए अंकित हो जाती थी, उनमें अद्भुत आकर्षण था। वे अपने बोल–चाल में रसीली अवधी भाषा का अत्यधिक प्रयोग करते थे और उनकी यही शैली विद्यार्थियों को अपनी तरफ आकर्षित करने के लिए विवश करती थी।

पुनः उन्होंने आगे कहा कि आज का दिन एक ऐसे शान्त हृदय शिक्षक को याद करने का दिन है, जिनकी अनमोल निधिया हिन्दी साहित्य को सतत प्रकाशमान करती रहेंगी। प्रो. सिंह में भौतिक और आध्यत्मिक तत्वों के साथ–साथ मानवीय और भक्ति का समन्वित रूप दिखई देता था। उन्होने अपनी ज्ञान को सात्विक भाव से भर दिया था, उनका यही भक्ति और उदार भाव उन्हे भक्ति साहित्य से प्राप्त हुआ था। मनुष्य को मिथक नही बनना चाहिए क्योंकि ऐसा करने से हम उस मनुष्य का अवमूल्यन कर देते है। सिंह साहब में भौतिक तत्व और आध्यात्मिक तत्व भी था, भक्ति साहित्य के आह्वाहन ने उनमें सात्विक तत्व भर दिया था। भक्ति तथा उदारता का भाव उन्हें भक्ति साहित्य से ही प्राप्त हुआ था।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रो. रामदेव शुक्ल ने अपनी स्मृतियॉ स्रोताओं के साथ साझा किया और उन्होने डॉ. सिंह की उदारता, व्यवस्थित व्यवहार और कुशलता की चर्चा करते हुए कहा कि बड़ा व्यक्ति

वह होता है जो अपने बड़प्पन से दूसरों को आच्छादित कर दे। उन्होने डॉ. सिंह के बहुआयामी व्यक्तित्व के अनेक बिन्दुओं को उद्घाटित किया।

उद्घाटन सत्र में आगत अतिथियों का स्वागत तथा संगोष्ठी की प्रस्ताविकी डॉ. सदानन्द प्रसाद गुप्त कार्यकारी अध्यक्ष उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ ने किया। संचालन डॉ. अमिता दूबे और आभार ज्ञापन महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह ने किया।

कार्यक्रम के प्रथम सत्र में ही डॉ.कृष्ण चन्द्र लाल द्वारा लिखित पुस्तक भगवती प्रसाद सिंह जीवन और साहित्य पुस्तक का लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम का प्रारम्भ मॉ सरस्वती की प्रतिमा पर पुष्पांजलि तथा सरस्वती वन्दना के साथ प्रारम्भ हुआ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. रामदेव शुक्ल ने किया तथा स्वागत वकतव्य एवं प्रस्तावना डॉ. सदानन्द प्रसाद गुप्त कार्यकारी अध्यक्ष उ.प्र.हिन्दी संस्थान लखनऊ ने तथा संचालन डॉ. अमिता दूबे ने किया।

कार्यक्रम के द्वितीय सत्र में विशिष्ट अतिथि के रूप में बोलते हुए डा. प्रेमचन्द सिंह, डॉ. उदय प्रताप सिंह, डॉ. कन्हैया सिंह ने भी डॉ. सिंह के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए डॉ. भगवती प्रसाद सिंह को एक संत साहित्यकार बताते हुए उनके समरस भाव व विराट व्यक्तित्व को उद्घाटित किया।

मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. अनन्त मिश्र ने कहा कि डॉ. सिंह मनोरंजनशील व्यक्तित्व के धनी थे। वे अपने विद्यार्थियों से कहा करते थे शोध धीरे–धीरे होता है। अतः शोध के लिए धैर्यशीलता और निष्ठा दोनो का होना आवश्यक है। वे कहावतों के माध्यम से अपनी बातों को रखने के आदी थे।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता करते हुए डॉ. केसीलाल ने कहा कि डॉ. सिंह की कृतियॉ हमे सदैव प्रेरित करती रहेंगी और वह हिन्दी साहित्य के लिए आजीवन प्रासंगिक बनी रहेंगी। डॉ. सिंह महामानव थे और एक ऐसे संत थे जिन्होने पाषाण को चीरकर अपनी जड़ो को पानी दिया था।

द्वितीय सत्र का संचालन डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय ने किया। संगोष्ठी में हिन्दी विभाग के डॉ. नित्यानन्द श्रीवास्तव, डॉ. विभा सिंह, श्री भगवान सिंह, डॉ. राकेश कुमार तथा अधिकाधिक संख्या में प्रतिभागी व छात्र/छात्रायें उपस्थित थे।

डॉ.(शैलेश कुमार सिंह)
प्रभारी, सूचना जनसम्पर्क